Jansatta - New Delhi - 11 - 02 - 2011

छात्र न मिले तो बंद हो सकते हैं कई कॉलेज

अवनीश कुमार

कानपुर, 10 फरवरी। इंजीनियरिंग सहित दूसरे पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए अहर्ता के मानक बदलने के अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) के फरमान से कॉलेज प्रबंधकों के होश फाख्ता हैं। इस आदेश से निजी कॉलेजों की सीटें भरने की सरकारी मुहिम ध्वस्त हो गई है। अपेक्षित संख्या में प्रवेश न मिले तो बीफार्मा की तरह कई कॉलेज बंद हो सकते हैं।

दस्तावेज गवाह हैं कि प्राविधिक विश्वविद्यालयों (जीबीटीयू व एमटीयू) से जुड़े शासन के ज्यादातर फैसले निजी इंजीनियरिंग कॉलेजों के हितों को ध्यान में रख कर होते रहे हैं। दोनों विश्वविद्यालयों से संबद्ध 675 इंजीनियरिंग में संचालित बीटेक, बीआर्क, होटल मैनेजमेंट, एमसीए, एमबीए और दूसरे पाठ्यक्रमों में अहर्ता सामान्य व ओबीसी वर्ग के लिए 45 व एससीएसटी के लिए 40 फीसद अंकों की थी। लेकिन एआईसीटीई के नियमों के मुताबिक इस बार अहर्ता क्रमशः 50 व 45 फीसद कर दी गई है। पहले इंटर तृतीय श्रेणी उत्तीर्ण एससीएसटी अभ्यर्थी यूपीएसईई क्वालीफाई करके प्रवेश पा जाते थे। लेकिन अब द्वितीय श्रेणी से कम पर प्रवेश नहीं होगा।

पिछले सालों में वैसे भी यूपीएसईई के लिए मेधावी छात्रों का मोह भंग हो रहा था। अब अहर्ता के प्राप्तांकों के पांच फीसद बढ़ जाने से इनकी संख्या में भारी गिरावट तय है। 2009 की यूपीएसई के लिए 2.80 लाख उम्मीदवारों ने आवेदन किया था। पिछले साल इनकी संख्या घट कर 2.34 लाख हो गई। 46 हजार प्रवेशार्थी घटने से निजी कॉलेजों को धक्का लगा है। जिसका अंदेशा था वही हुआ। विभिन्न पाठ्यक्रमों की कुल 1.40 लाख सीटों में काउंसलिंग से 90 हजार सीटें भर पाईं। बीटेक की लगभग एक लाख सीटों में 40 हजार काउंसलिंग से तथा 24,800 सीधे भरी जा सकीं। लगभग 39 हजार सीटें खाली रह गईं। इस स्थिति ने कई कॉलेजों को घाटे में खड़ा कर दिया। खाली सीटों वाले घाटे में चल रहे कॉलेजों को जरूरत भर के लिए प्रवेश मिल जाएं इसीलिए शासन ने यूपीएसईई के क्वलीफाइंग मार्क्स किसी बोर्ड परीक्षा के न्यूनतम उत्तीर्णांक 33 फीसद से भी कम रखे। सीटें भरने के लिए इस बार एआईईईई के माध्यम से दस फीसद से बढ़ा कर 20 फीसद प्रवेश का फैसला हुआ। लेकिन इन फैसलों पर एआईसीटीई का यह फैसला भारी पड़ गया। इस बार प्रवेशार्थियों की संख्या कुल सीटों 1.65 लाख जितनी ही होने की संभावना है। इस तरह सीटें भरने की पूरी रणनीति ध्वस्त हो गई है।